HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-III, (Causes of The Rise of National States)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 78

"राष्ट्रीय राज्यों के उदय के करणं"

(CAUSES OF THE RISE OF NATIONAL STATES)

राष्ट्रीय राज्य --जिन राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना 16वीं शताब्दी के आरम्भ में हुई, उनमें राजा की सत्ता निरंकुश थी। निरंकुश राजतन्त्र के अन्तर्गत जनता की दृष्टि में राजा पूज्य था। पृथ्वी पर वह ईश्वर का प्रतिनिधि था। अपनी स्वेच्छा से राजा प्रजा पर शासन करता था। राजा की इच्छा ही कानून थी। इस प्रकार का निरंकुश राजतन्त्र जो दैवी आधार पर स्वेच्छाचारी था, यूरोप के राष्ट्रीय राज्यों में स्थापित हुआ। ऐसी असीमित सत्ता का प्रजा ने समर्थन किया क्योंकि उसका विचार था कि शान्ति और व्यवस्था को

Dr Guddy Kumari (A.N.D college)

शक्तिशाली राजा ही स्थापित कर सकता था। राजा के विरुद्ध विद्रोह को गंभीरतम अपराध समझा जाता था। इस प्रकार के राष्ट्रीय राजतंत्रों के उत्थान के कई कारण थे जो विशेष रूप से पुनर्जागरण के प्रभाव से उत्पन्न हुए थे।

(1) धर्मयुद्धों का प्रभाव-यूरोप के शासकों का क्रूसेड या धर्मयुद्धों के कारण पश्चिम एशिया के और विजेन्टाइन साम्राज्य से सम्पर्क हुआ। पश्चिम एशिया के इन राज्यों में निरंकुश राजतन्त्र स्थापित था। इन राजतंत्र से ही उन्होने निरंकुश राजसत्ता स्थापित करने की प्रेरणा प्राप्त की। जब तुर्को ने 1453 ई. में विजेन्टाइन साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और मध्य यूरोप की ओर उन्होंने बढ़ना आरम्भ किया, तब पश्चिमी और मध्य यूरोप के राज्यों के लिए संकट उत्पन्न हो गया। अब अपनी सुरक्षा के लिये इन राज्यों को चिन्तित होना पड़ा। इस स्थिति में इन राज्यों में सुदृढ़ राजतन्त्रों का उत्थान हुआ।

(2) सामन्तवाद का पतन-अनेक सामन्त क्रूसेड या धर्म युद्धों में मारे जा चुके थे। कुछ निकट पूर्व में जाकर बस गये थे और कुछ नगरों में रहकर व्यापार करने लगे थे। पश्चिमी यूरोप के देशों में इससे सामन्तवाद दुर्बल हो गया था और वह जनता को नेतृत्व देने की स्थिति में नहीं था। व्यापार करने वाले सामन्त भी अन्य

Dr Gudav Kumar (A.N.D college)

व्यापारियों के समान शान्ति और सुरक्षा चाहते थे। इसके लिये वे दृढ़ राजतन्त्रीय सरकार की इच्छा रखते थे।

(3) मध्यम वर्ग का उत्थान–पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप व्यापारी और बौद्धिक वर्गों का उत्थान हुआ था। ये वर्ग दृढ़ राजतन्त्र के समर्थक थे क्योंकि उनका विश्वास था कि शक्तिशाली राजा ही शान्ति और व्यवस्था स्थापित कर सकता था। शान्ति और व्यवस्था व्यापार, शिक्षा, कला, साहित्य आदि विकास के लिये आवश्यक थी। इस मध्यम वर्ग के पास जन, धन, बुद्धि थी। राजाओं को इस वर्ग ने धन, बौद्धिक समर्थन तथा सैनिक भी प्रदान किये। राजा की आवश्यकताओं को इस वर्ग के धनी और विद्वान लोगों ने पूरा किया और इसके बदले में इस वर्ग को राजा ने व्यापारिक तथा आर्थिक एकाधिकार व सुविधाएँ प्रदान कीं। राष्ट्रीय विकास के लिये प्रबुद्ध वर्ग दृढ़ राजतन्त्र चाहता था अत: इसके समर्थन में बौद्धिक तर्क दिये गये।

(4) आग्नेयास्त्रों का आविष्कार-आग्नेयास्त्रों के आविष्कार ने निरंकुश राजतंत्र के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान किया। सामंतों के वर्ग और उनकी अश्वारोही सेना बारूद और बन्दूकों के सामने व्यर्थ हो गई। बारूद तथा बंदूकों पर राजाओं ने एकाधिकार रखा। स्थायी सेनाओं का उन्होंने निर्माण किया और सामन्तों की सेनाओं पर प्रतिबंध लगा

Dr Guddy Kumari (A.N.D college)

दिया। सामन्त इन कार्यों से अत्यन्त दुर्बल हो गये और उन्हें शक्तिशाली राजाओं के सेवक की स्थिति स्वीकार करनी पड़ी।

(5) राष्ट्रीयता की भावना--राष्ट्रीयता की भावना को धर्मयुद्ध और स्वदेशी साहित्य तथा अंतरराष्ट्रीय युद्धों ने शक्तिशाली बनाया था। मुख्य रूप से मध्यम वर्ग में इस प्रकार की देशभक्ति की भावना फैली थी। राष्ट्रीय राजतंत्रों को इस भावना ने शक्ति प्रदान की। इस काल में राजभक्ति को ही देशभक्ति समझा जाता था। जनता ने राष्ट्रीय गौरव तथा सम्मान की भावना के कारण राजाओं को शक्तिशाली बनाया।

(6) चर्च की दुर्बल स्थिति-- मध्य काल में चर्च शक्तिशाली था उसने विभिन्न राज्यों पर अपना नियन्त्रण बनाये रखा था। पोप की आज्ञा सर्वोपरि होती थी। राजा उसकी स्वीकृति से गद्दी पर बैठते और उसकी नाराजी होने पर उन्हें राजगद्दी छोड़नी पड़ती थी। पुनर्जागरण के कारण जब अंधविश्वासों का स्थान तर्क ने ले लिया तो पोप की स्थिति दुर्बल हो गई। इससे पोप के नियन्त्रण से राजा मुक्त हो गये। जनसाधारण ने भी पोप का विरोध करके राजाओं को शक्तिशाली बनाने में अपना योगदान दिया पोप और चर्च के अधिकारियों के विलासितापूर्ण जीवन की आलोचना होने से भी चर्च नैतिक दृष्टि से दुर्बल हो गया। एक और कारण भी था। मध्य युग

Dr Guddy Kumari (A.N.D college)

की अन्तिम शताब्दियों में पश्चिमी यूरोप में अराजकता के कारण चर्च ने शान्ति और व्यवस्था स्थापित करने के लिये राजाओं का समर्थन किया था। इस प्रकार राजाओं की निरंकुश सत्ता की स्थापना में चर्च का भी अप्रत्यक्ष योगदान था।

(7) राजनीतिक विचारों का योगदान-तत्कालीन विचारधारा भी निरंकुश राजतन्त्र के पक्ष में थी। मैकियावेली ने अपने ग्रन्थ 'दि प्रिन्स' में इस सिद्धान्त की स्थापना की कि व्यक्ति तथा सम्पत्ति की सुरक्षा राज्य का उद्देश्य होना चाहिये। उसका विचार था कि इन कार्यों को करने के लिये प्रजातन्त्र पर्याप्त नहीं था और निरंकुश राजतन्त्र में ही इस प्रकार की सुरक्षा सम्भव हो सकती थी। वास्तव में मेकियावेली प्रथम राजनीतिक विचारक था जिसने निरंकुश राजतन्त्र का समर्थन किया तथा उसको वैधता प्रदान करके उसकी दार्शनिक व्याख्या की। पहले भी निरंकुश राजा हुए थे लेकिन उन्हें इस प्रकार का दार्शनिक समर्थन प्राप्त नहीं था।

फ्रेन्च विद्वान बोडिन द्वारा अपने ग्रन्थ 'दि स्टेट' में सम्प्रभुता के सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए कहा गया कि सम्प्रभुता की सत्ता असीमित होनी चाहिये। उसका मानना था कि समस्त कानूनों का स्रोत राजा होता था और केवल ईश्वर के प्रति वह उत्तरदायी होता था।

DrGuddy Kumari (A.N.D college)

निष्कर्ष -- इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि यूरोप में 16वीं शताब्दी में अनेक राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक कारणों ने निरंकुश राष्ट्रीय राजतंत्र की स्थापना में योगदान किया था। इन राष्ट्रीय राज्यों की सीमाएँ भौगोलिक कारणों से भी स्पष्ट थीं। इंग्लैण्ड को समुद्र ने पृथकता प्रदान की थी और वह राष्ट्र बनने में सफल हो गया। इसी प्रकार आल्पस पर्वत ने इटली को, पिरेनीज पर्वत ने स्पेन को, राइन नदी और वोसजी पर्वत फ्रांस और जर्मनी को क्षेत्रीय स्पष्टता प्रदान की थी। राष्ट्रीय हित को अब सर्वोपरि समझा जाता था और नैतिकता की अवधारणा का अन्त हो गया था। अपने समुद्री डाकुओं को इंग्लैण्ड ने राष्ट्रीय नेता कहा क्योकि राष्ट्रीय गौरव में उन्होंने वृद्धि की थी। पश्चिमी यूरोप में प्रारम्भिक चरण में राष्ट्रीय निरंकुश राजतंत्रों की स्थापना हुई थी। ये राज्य इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन और पुर्तगाल थे जो 16वीं शताब्दी के आरम्भ में राष्ट्र के रूप में संगठित हो गये। बाद में राष्ट्रीय आधार पर निर्मित राज्य डेनमार्क, स्वीडन, हंगरी, पोलैण्ड और लिथुआनिया थे।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)